System Psy.

Dr. Sunil Kr. 'Suman'
Assistant Professor (Guest)
Dept. of Psychology
D.B. college Jaynagar
L.N.M.U. Darbhanga

Study material
B.A. Part-II (H)
Paper- IV
Date:- 2-11-20
To-Next-class.

Humanistic Psychology

Contribution of Rogers

(4) आत्म-सिद्धि (Self-actualization):- आत्म-सिद्धि एक सामान्य संप्रत्यय है जिसपर बहुत सारे मानवतावादी मनोवैज्ञानिकों ने प्रकाश डाला है। रोजर्स का मत है कि प्रत्येक व्यक्ति में अपने अनोखे अन्त:शक्ति (unique potential) की पहचान की जन्मजात प्रवृत्ति (inherent tendency) होती है। इनका मत है कि आत्म-सिद्धि एक ऐसा वर्द्धन बल (growth force) है जो व्यक्ति की आनुवंशिकता (heredity) का एक हिस्सा होता है। इसमें न केवल जैविक अन्त:शक्ति (Biological growth) निहित होता है बल्कि इसमें मनोवैज्ञानिक वर्द्धन (Psychological growth) तथा संपोषण (maintenance) एवं उन्नति की प्रवृत्ति भी सम्मिलित होता है। रोजर्स के अनुसार आत्म-सिद्धि की कई विशेषताएं है जिनमें निम्नांकित प्रमुख है।

(i) आत्मसिद्धि धीरे-धीरे सरलता से जटिलता की स्थिति में विकसीत होते जाती है। जैसे-जैसे व्यक्ति की अनुभूतियाँ मजबूत होती जाती है उसका आत्मन अधिक पुष्ट एवं सिद्ध होते जाता है और इनसे अंततोगत्वा सर्जनात्मकता (creativity) का विकास होता है। इसका मतलब यह हुआ कि ऐसी अनुभूतियों से व्यक्ति अधिक सर्जनात्मक (creative) हो जाता है।

P.T.O

(ii) दूसरा आत्म-सिद्धि एक गत्यात्मक बल (dynamic Force) है। वैसे व्यक्ति जिसमें आत्म-सिद्धि पर्याप्त मात्रा में होती है, में हमेशा आगे बढ़ने की प्रवृत्ति होती है। ऐसे व्यक्ति जिन्दगी के किसी मोड़ पर रुकना नहीं चाहते हैं। सामाजिक रूप से अनुमोदित तरीके के अनुसार वे अपने आत्म अन्तःशक्ति (Self-Potential) को पूरा करने में काफी विश्वास रखते हैं। रोजर्स ने दो मौलिक आवश्यकताओं का वर्णन किया है जो आत्म-सिद्धि से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित होती है। ये आवश्यकताएं है - दूसरों के लिए स्वीकारात्मक स्नेह (Positive Regard For others) तथा आत्म सम्मान (Self-Regard) की आवश्यकता। ये दोनों आवश्यकताओं को प्राणी बचपनावस्था में माँ के स्नेह एवं प्यार से सीख लेता है।

रोजर्स के आत्मन-सिद्धान्त (Self-Theory) में आलोचना की गयी है। इसमें ऐसा कहा जाता है कि उसके सिद्धान्त में अचेतन का महत्व नहीं दिया गया है जो मानव व्यवहार को नियंत्रित करने में अहम भूमिका निभाता है। स्मिथ (Smith-1950) ने कहा है कि रोजर्स का यह सिद्धान्त बिल्कुल नये ढंग का घटना क्रिया विज्ञान (Phenomenology) पर आधारित है। इन आलोचनाओं के बावजूद रोजर्स द्वारा आत्मन (Self) पर दिया गया बल ने कई तरह के शोधों एवं आनुभविक तथ्यों को प्रोत्साहित किया हालाँकि यह बात जरूर है कि इन सभी तरह के शोधों के परिणाम उनके पक्ष में नहीं गया है।

End.

Scanned with CamScanner